एक विशेष जगह जाना!

पेट्रीसिया मैककिसैक

चित्र: जैरी पिंकनी

एक विशेष जगह जाना!

पेट्रीसिया मैककिसैक

चित्र: जैरी पिंकनी
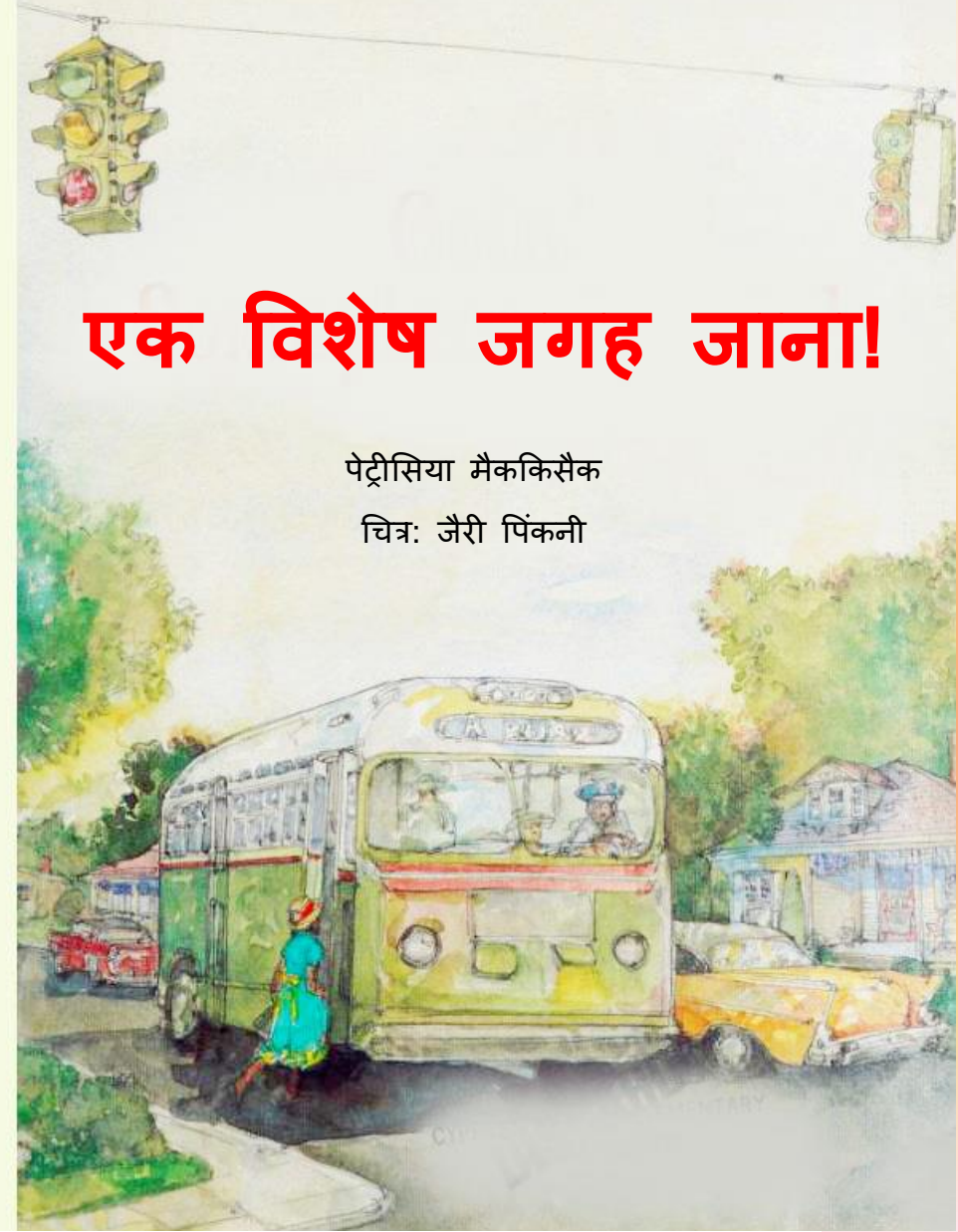
ट्रिसिया ऐन उत्साह से फूटने वाली थी.

अपनी उंगलियों को बाँधकर और अपनी आँखें बंद करके, उसने अपना प्रश्न पूछा. "मामा फ्रांसिस, क्या मैं आज अकेले एक विशेष स्थान पर जा सकती हूँ? प्लीज़? मुझे पता है कि बस से कहाँ उतरना है और कौन-कौन सी सड़कों पर जाना है."

हालांकि उस जगह का कुछ और नाम था, लेकिन ट्रिसिया ऐन हमेशा उसे "विशेष स्थान" कहती थी क्योंकि वो दुनिया में उसका पसंदीदा स्थान था. "कृपया क्या मैं जा सकती हूँ? चोटी पर उस इमारत मे अपने मार्शमॉलो के साथ?"

"मैं तुम्हें दुनिया में गुम हो जाने के लिए तैयार नहीं हूं," मामा फ्रांसेस ने उत्तर दिया, और उन्होंने ट्रिसिया ऐन की पोशाक का फीता बाँधा. "देखो, अकेले जाना एक बहुत बड़ा कदम होता है."

"मैं उसके लिए तैयार हूँ," लड़की ने फर्श पर एक बड़ी छलांग लगाते हुए कहा. "देखो मैं कितना ऊंचा कूद सकती हूँ?"

मामा फ्रांसेस काफी समय तक अपनी पोती के चेहरे का अध्ययन करते हुए हंसती रहीं. "मुझे विश्वास है कि तुम उस हर बात का ध्यान रखोगी जो मैंने तुम्हें बताई हैं."

"मैं ज़रूर ध्यान रखूंगी," ट्रिसिया ऐन ने आत्मविश्वास के साथ कहा. अचानक, उसकी मुस्कान एक पूरी मुस्कराहट में बदल गई. "तो, आप कह रही हैं कि मैं जा सकती हूँ?"

"देखो, इससे पहले मैं अपना दिमाग बदलूँ तुम जल्दी से यहाँ से खिसक लो."

अपने थैले को कंधे पर उठाकर, ट्रिसिया ऐन ने अपनी दादी को धन्यवाद दिया. फिर वो दरवाजे से बाहर निकली और फुटपाथ पर उतरी.

"देखो एक बात ध्यान रखना, " मामा फ्रांसिस ने पीछे से पुकारा, "अपना सिर ऊपर उठाकर चलना और ऐसे व्यवहार करना जैसे तुम्हारे साथ कोई है."
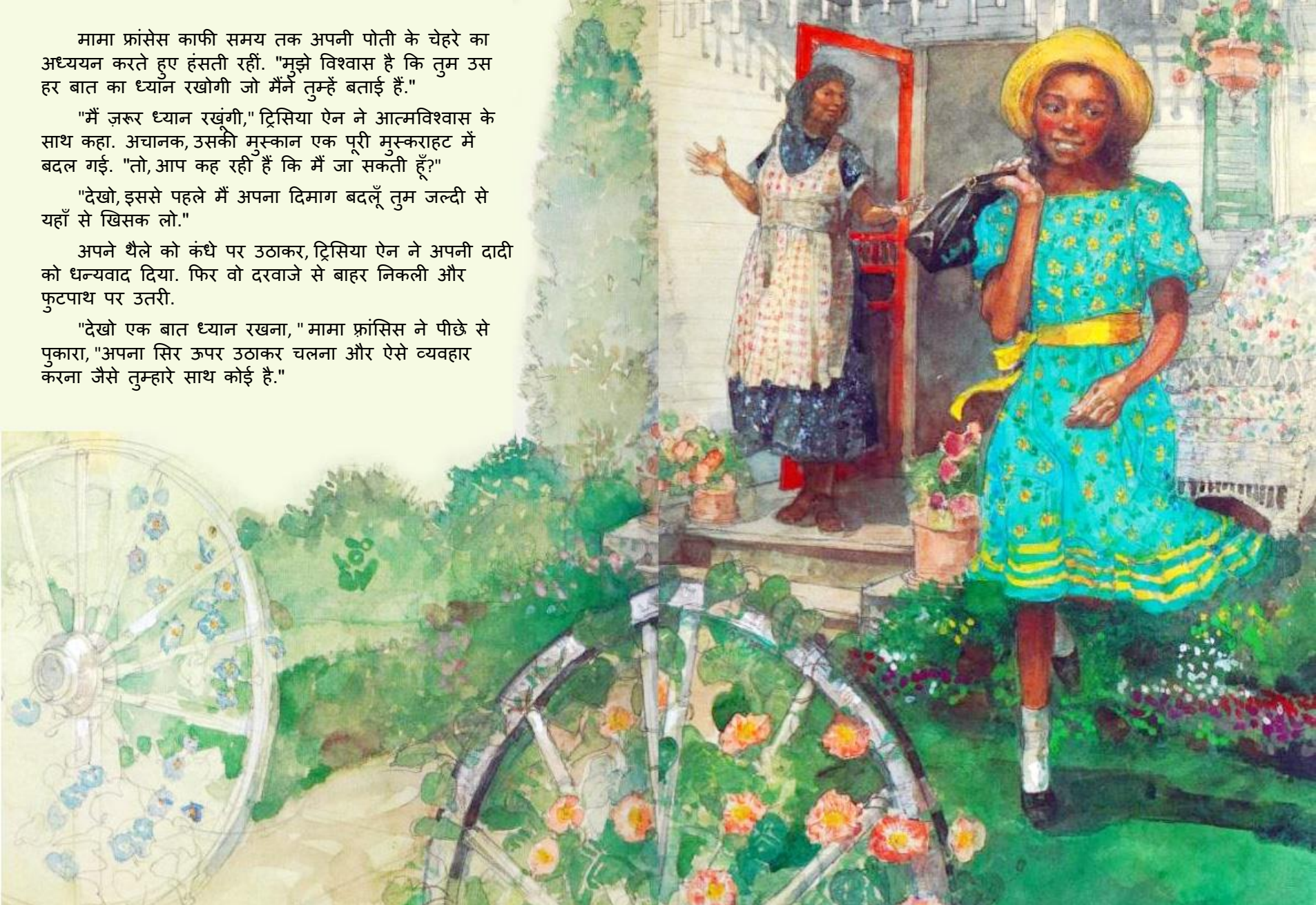
कोने पर एक हरे और सफेद रंग की बस झटके से साथ आकर रुकी. जब बस का दरवाजा खुला तो ट्रिसिया ऐन ने बक्से में अपना किराया उसी तरह गिराया जैसे मामा फ्रांसेस उसके साथ हों.

लड़की ने अपने कंधों को झिड़का और वो पीछे की ओर चली. वो "जिम-क्रो" चिन्ह के पीछे की एक सीट पर जाकर बैठी जहाँ लिखा था : **कालों के लिए**.

ट्रिसिया ऐन ने अपने पूरे जीवन में ऐसे संकेत देखे थे. उसने याद किया जब उसने और मामा फ्रांसेस ने पहली बार इस बस में सवारी की थी, और दादी ने उससे कहा था, "वे संकेत हमें बताते हैं कि हमें कहाँ बैठना है, लेकिन वे हमें यह नहीं बता सकते कि हमें क्या सोचना है."

"मैं एक विशेष स्थान के बारे में सोच रही हूँ," ट्रिसिया ऐन ने खुद से कहा और वो खिड़की से बाहर देखने लगी.

हर स्टॉप पर बस और भरने लगी. बाजार से फल-सब्जियों के थैले लेकर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. सिलाई क्लब वाली मामा फ्रांसिस की मित्र मिसेज़ ग्रैनेल बोर्ड पर चढ़ गईं. जैसे ही वो पीछे की ओर चलीं, ट्रिसिया ऐन ने देखा कि "जिम-क्रो" साइन के पीछे कोई सीट खाली नहीं बची थी. इसलिए वो उठ खड़ी हुई और उसने मिसेज़ ग्रैनेल को अपना स्थान दे दिया.

"यह उचित नहीं है," उसने आगे की खाली सीटों को देखते हुए कहा.

"लेकिन ऐसा ही होता है, बेटी," मिसेज़ ग्रैनेल ने कहा.

"मुझे समझ में नहीं आता है कि आखिर क्यों?" उसने शुरू किया. लेकिन तब तक बस कैपिटल स्क्वायर यानी ट्रिसिया ऐन के स्टॉप पर पहुंच चुकी थी. दरवाजे खुल गए और वो जल्दी से बाहर निकल गई.

"अपना सर ऊपर उठाकर चलना," मिसेज़ ग्रैनेल, बस की खिड़की में से चिल्लाईं.
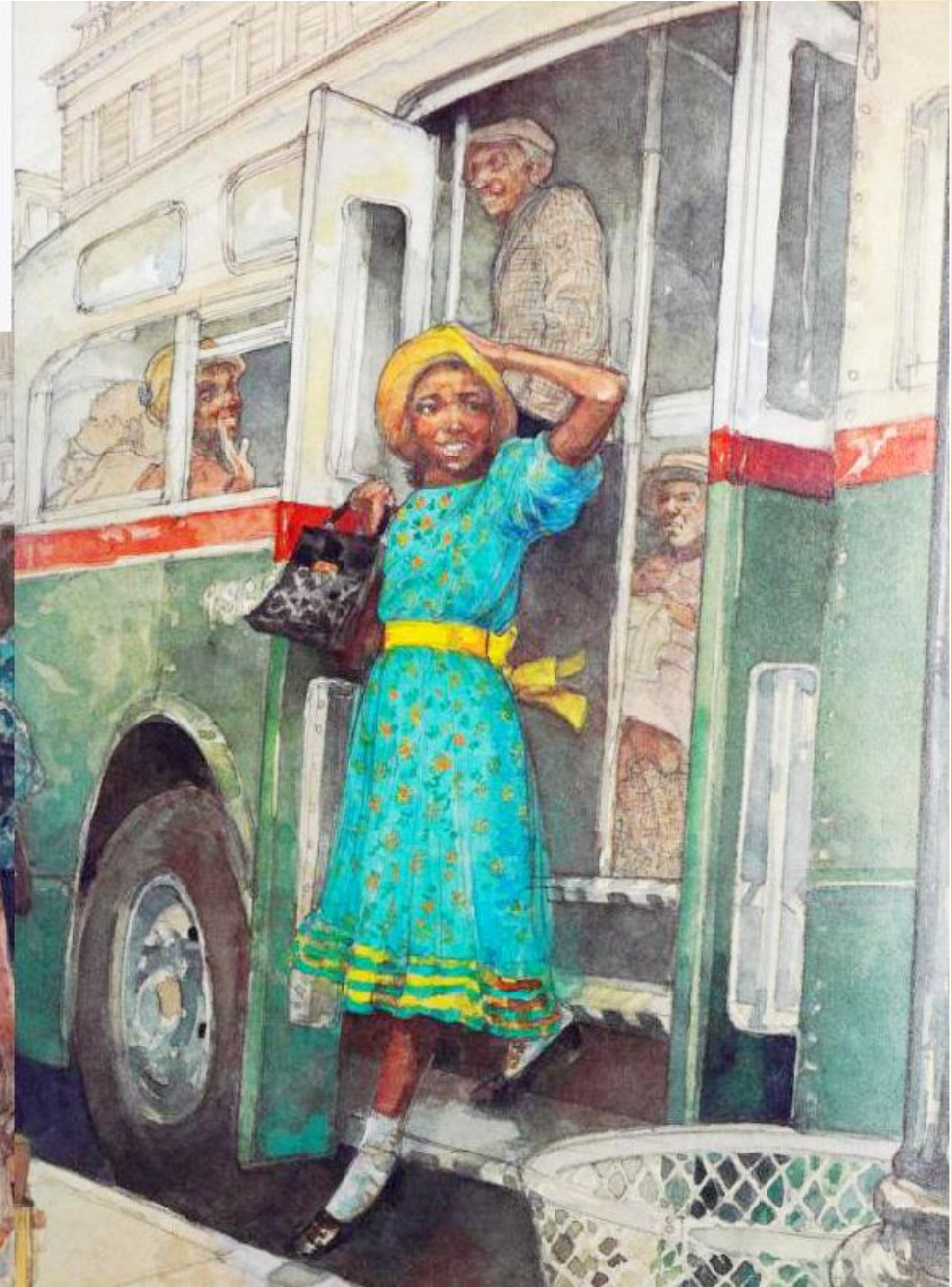
अपनी टोपी पकड़े हुए, ट्रिसिया ऐन, पीस फाउंटेन के शानदार वाटर-शो को देखने के लिए रुकी. हवा में ऊंची गोली जैसे उठने वाले वाले स्प्रे को देखने से ट्रिसिया ऐन का सिर चक्कर खाने लगा. लेकिन उसे वो अहसास पसंद आया और उसने अपनी बाहों को फैलाकर गोल-गोल चक्कर लगाए. फिर, हंसते हुए, और लड़खड़ाती टांगों से पास की एक बेंच पर जाकर बैठ गई.
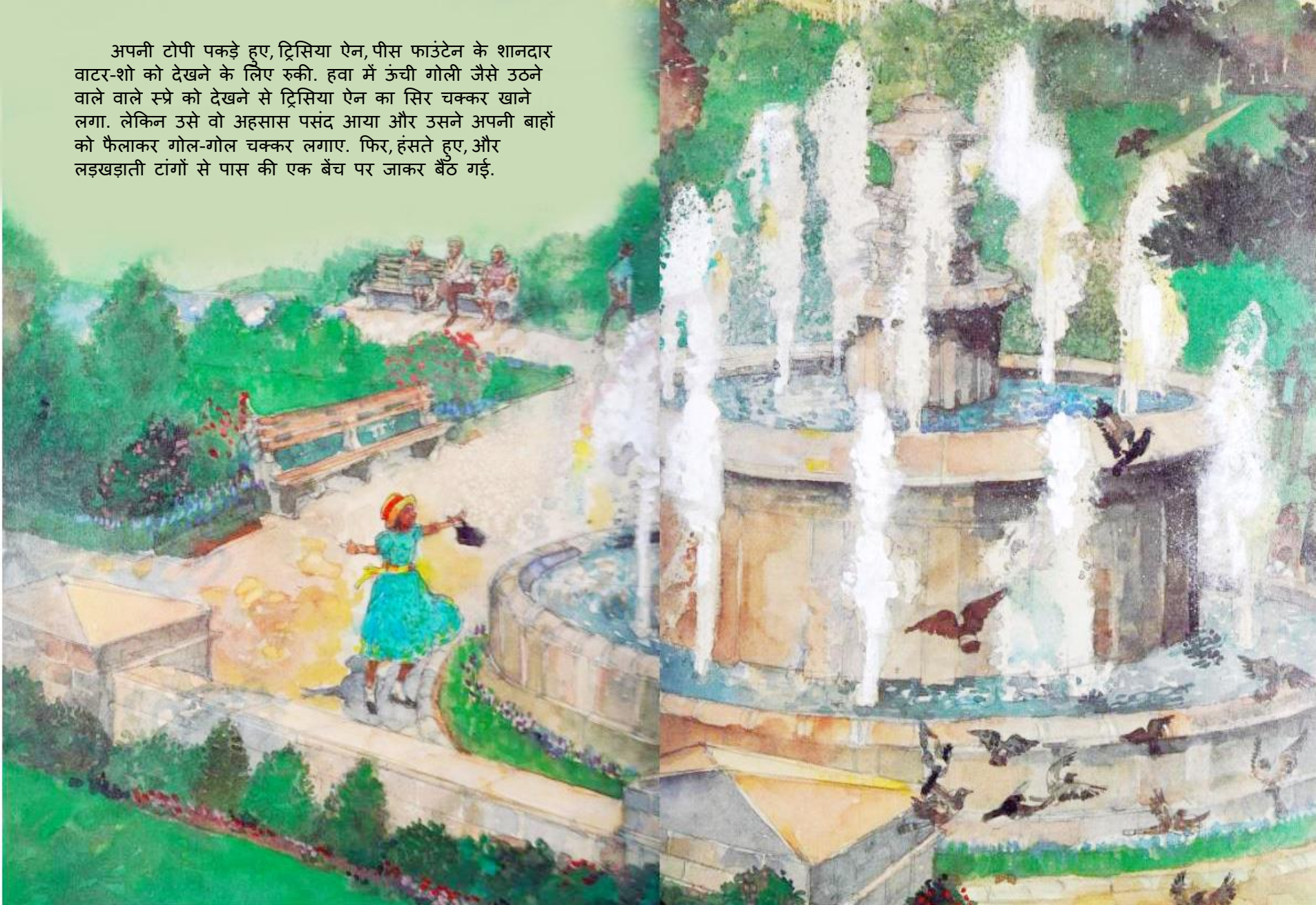
तुरंत, ट्रिसिया ऐन छलांग लगाकर बस से उठ गई. बेंच पर एक चिन्ह था जिस पर लिखा था: **केवल गोरों के लिए**.

उसका चेहरा मुरझा गया, और उसका मन मामा फ्रांसिस के मजबूत हाथ को थामने का हुआ. "मूर्खतापूर्ण संकेत," वो बुदबुदाती हुई शांत पैरों से वहां से आगे बढ़ी.
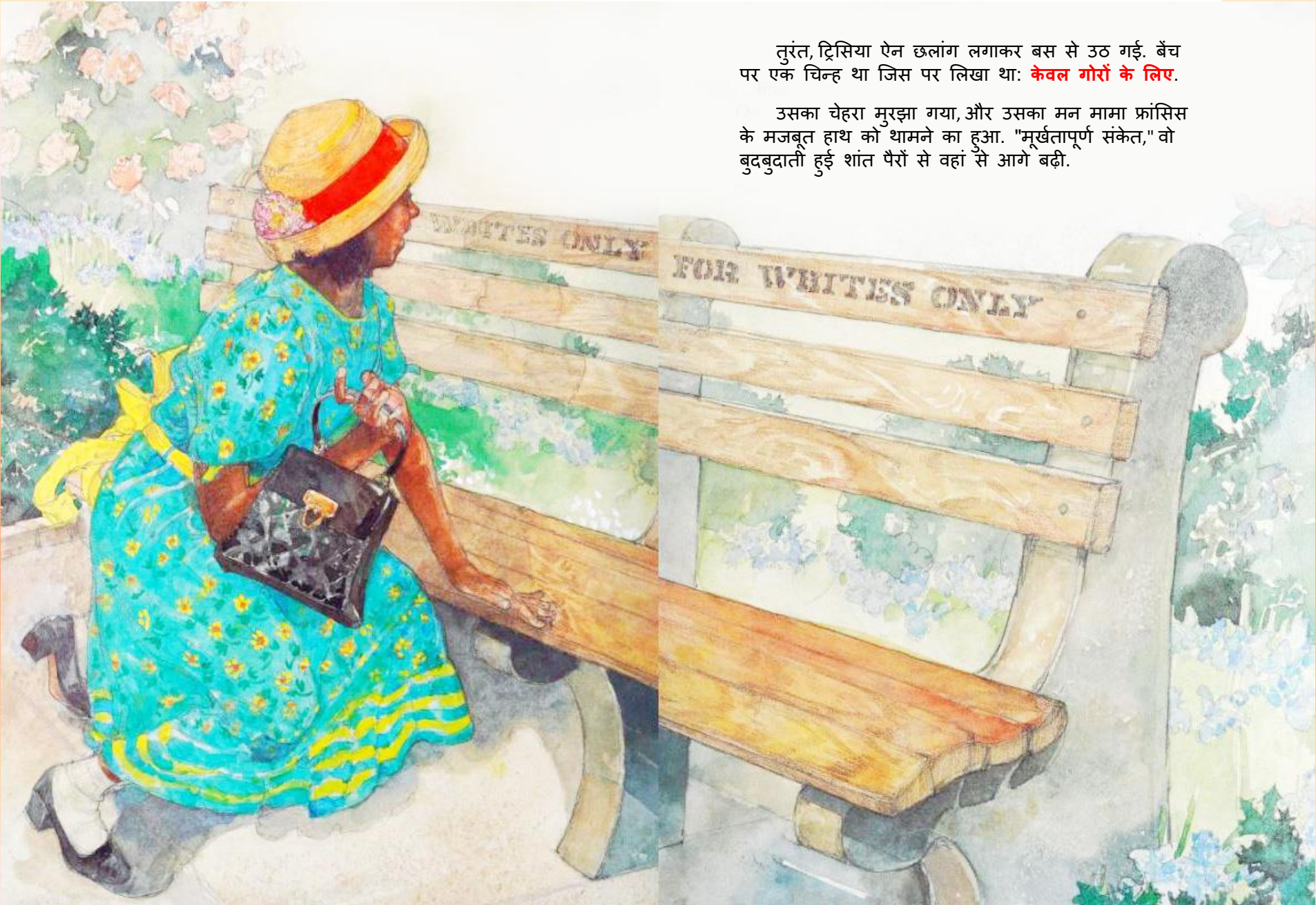
चौक के किनारे पर, उसने एक खोमचे वाले जिमी-ली का अभिवादन किया. "तुम्हारा चेहरा इतना उदास क्यों है?" उसने ट्रिसिया ऐन को एक मुफ्त प्रेट्ज़ेल देते हुए पूछा.

"जिम-क्रो कानून मुझे एकदम पागल बना देते हैं!" ट्रिसिया ऐन ने कहा. "मेरे दादाजी पीस फाउंटेन बनाने वालों में से एक राजमिस्त्री थे. मैं बैठकर उसका आनंद क्यों नहीं ले सकती?"

जिमी-ली ने मुनरो रेस्तरां की खिड़की में लगे एक चिन्ह की ओर इशारा किया. उसने कहा, "मेरा भाई उनके द्वारा परोसा जाने वाला सारा खाना पकाता है, लेकिन वो उनकी किसी टेबल पर नहीं बैठ सकता है और न ही उनके साथ खाना खा सकता है?" फिर एक हंसी के साथ वो फुसफुसाया, "ऐसा नहीं है कि मैं अपने भाई जेस्सी का बनाया भोजन, पसंद करता हूं. लेकिन कोई काला आदमी वहां पानी तक नहीं पी सकता है."

ट्रैफिक लाइट बदल गई और ट्रिसिया ऐन सावधानी से सड़क पर चलने लगी. " जिम-क्रो संकेतों पर अपनी खुशी को बर्बाद मत करो," जिमी-ली पीछे से चिल्लाया.

ट्रिसिया ऐन ने अपने कंधों को पीछे खींचा और उसने उस गर्म और स्वागत करने वाली जगह के बारे में सोचा जहां रंगभेद के कोई संकेत नहीं थे. दसवीं एवेन्यू के बाद उसने फिलिंग स्टेशन को पार किया, और जिमी-ली के दिए प्रेट्ज़ेल को खाने के बाद वो एक कोल्ड ड्रिंक खरीदने के लिए रुकी.

दूसरी ट्रैफिक लाइट के बाद साउथलैंड होटल उसके सामने एक शानदार महल के रूप में खड़ा था. होटल के दरबान मिस्टर जॉन विलिस ने उसे देखा और कहा, "लगता है कि स्वर्ग की एक देवदूत यहाँ आई हैं," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा.

ट्रिसिया ऐन उनकी ओर वापस मुस्कुराई. मिस्टर जॉन विलिस हमेशा अच्छी बातें कहते थे. "नहीं, सर. मैं सिर्फ ट्रिसिया ऐन हूँ."

"तुम्हारे मुंह पर मुस्कुराहट है, लेकिन आँखों में नहीं हैं," उन्होंने कहा.
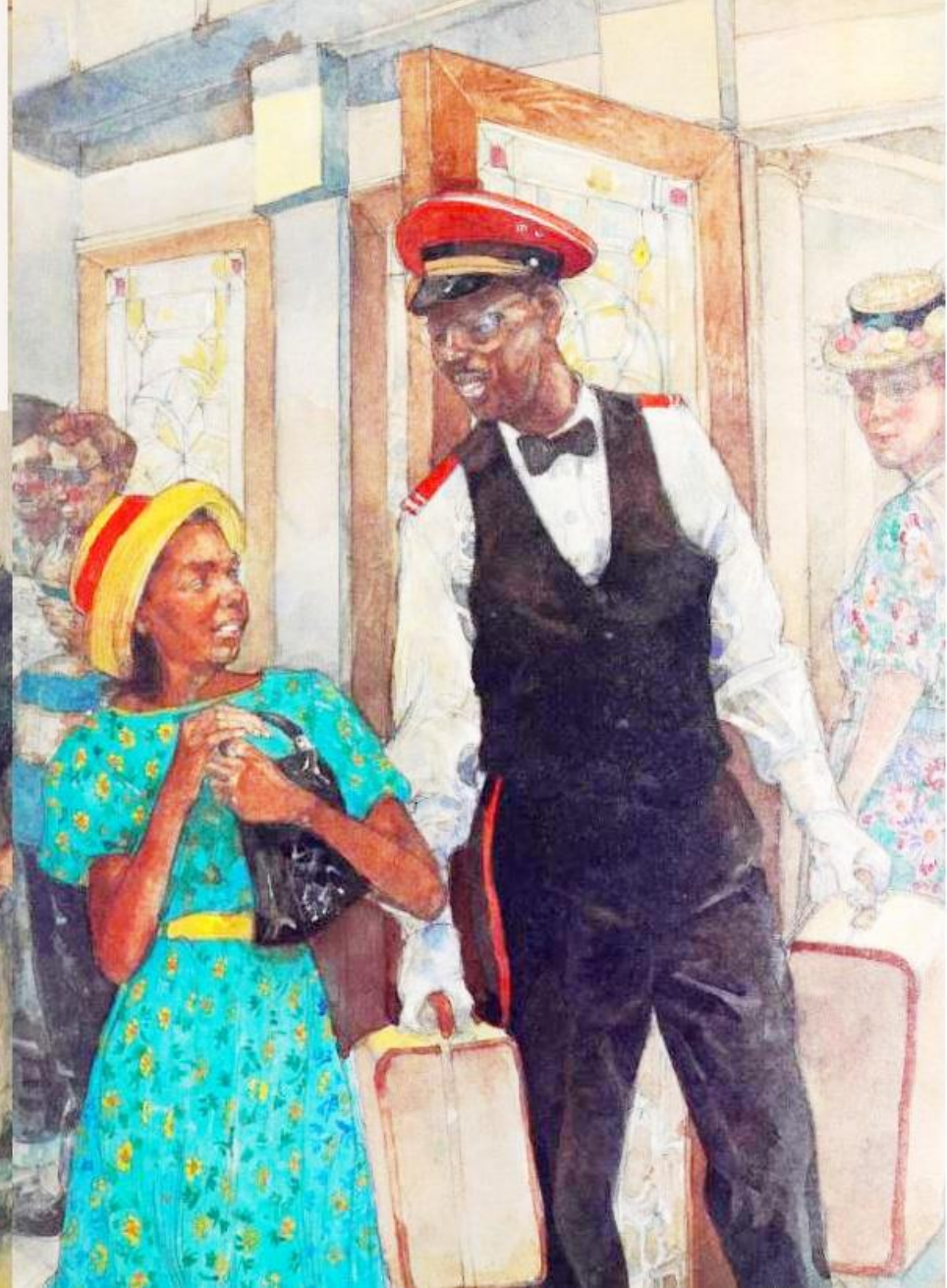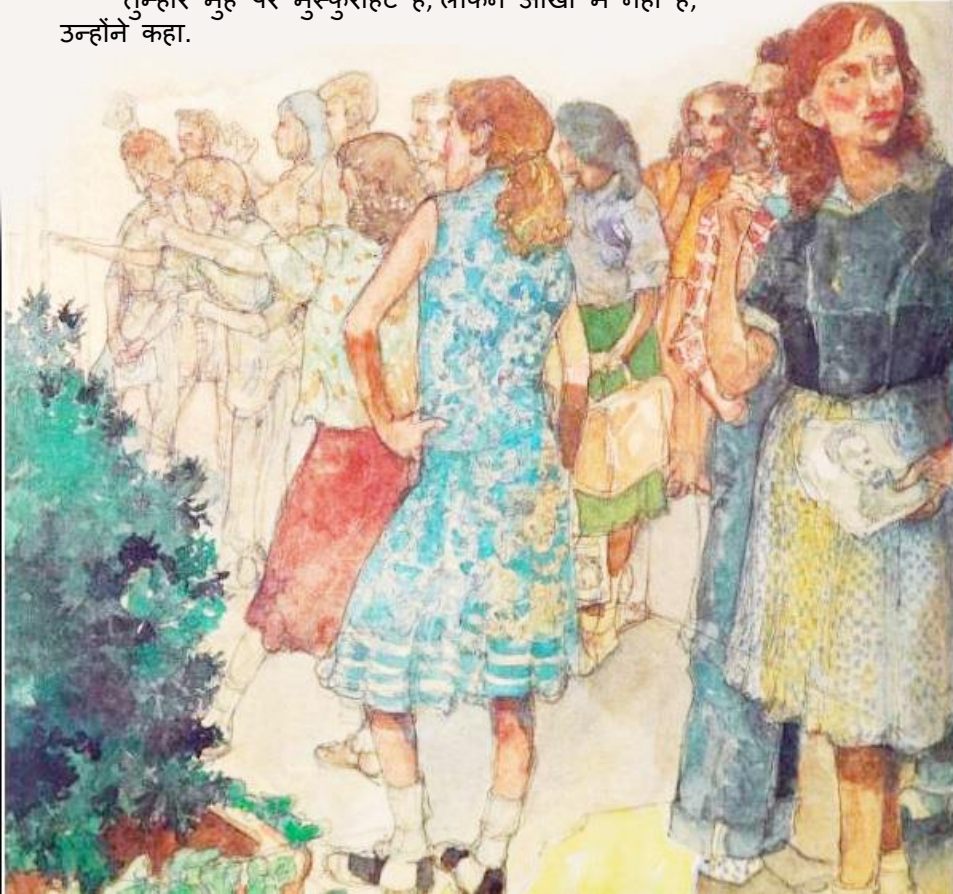
तभी दो पुलिस सुरक्षाकर्मियों के साथ एक लंबी सफेद कार होटल के सामने आकर रुकी. काले चमकदार बालों और शर्मीली आँखों वाला एक आदमी कार में से बाहर निकला. अचानक हर तरफ लोग चिल्लाने लगे और उसकी ओर ऑटोग्राफ के लिए दौड़ने लगे, उससे भीख मांगने लगे. ट्रिसिया ऐन भीड़ में फंस गई और अंदर बहकर चली गई.

अक्सर वो सोचती थी कि उन घुमावदार सीढ़ियों के शाही रेड कार्पेट पर चलना कैसा लगेगा, या एक साथ लाखों हीरों से जड़े झूमर की रोशनी में खड़े होना कैसा होगा? अब, वो साउथलैंड होटल की भव्य लॉबी के बीचोबीच खड़ी थी.
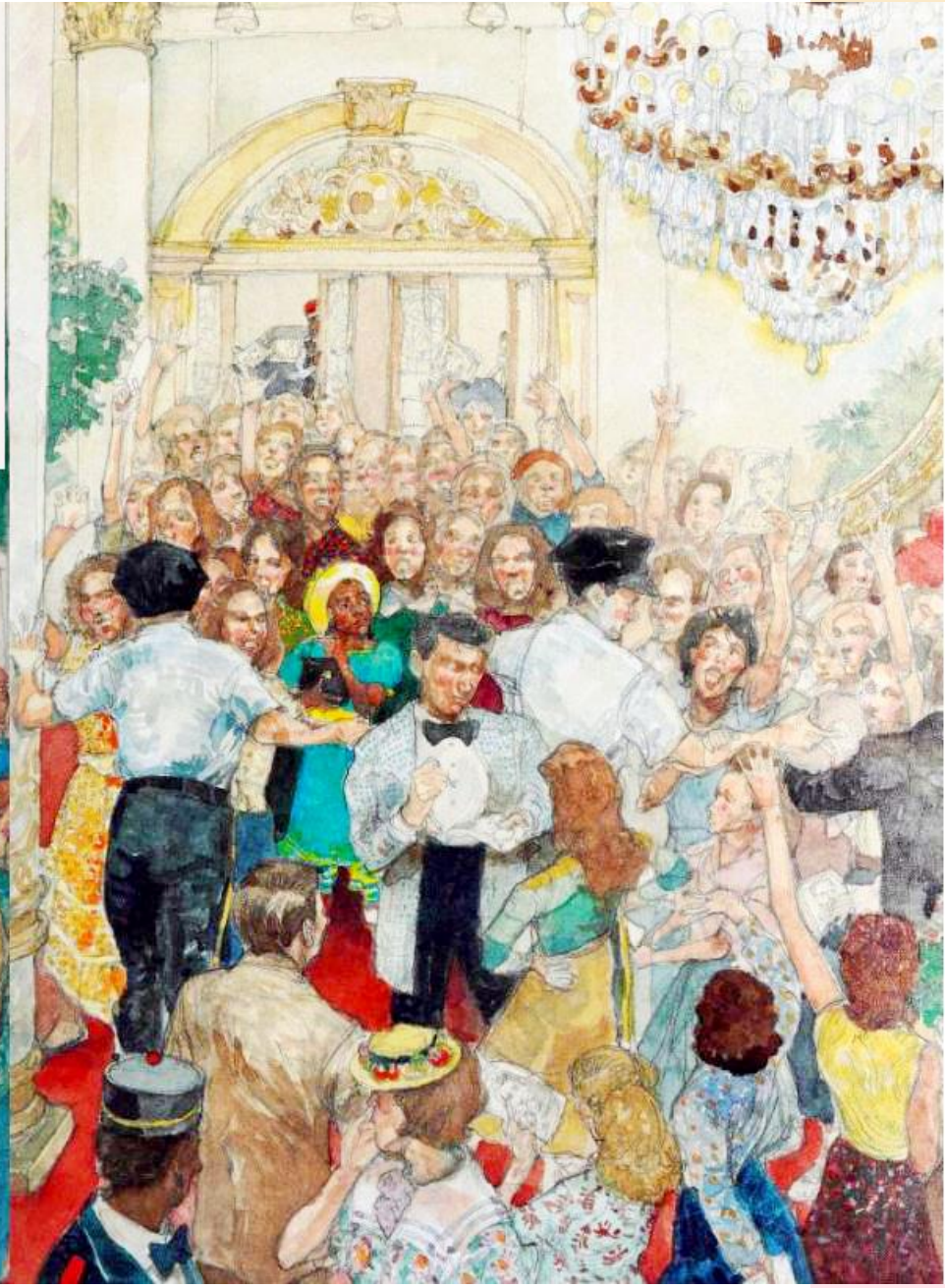
किसी ने ट्रिसिया ऐन की ओर इशारा किया. "वो यहाँ क्या कर रही है?"

ऐसा लग रहा था जैसे सारी दुनिया ने बोलना और हिलना बंद कर दिया हो और वो उसे घूर रही हो. प्रबंधक ने भीड़ को धक्का देकर हटाया. "तुम्हें क्या लगता है? तुम अंदर कैसे आ गई? काले लोगों को अंदर आने की अनुमति नहीं है!" और फिर उसने ट्रिसिया ऐन को दूर हटाने की कोशिश की.

ट्रिसिया ऐन अपना सिर हिलाते हुए पीछे हटी. "मेरा मतलब यहाँ अंदर आने का मन नहीं था ... " उसने कहा. लेकिन असल में उसका रोने का मन कर रहा था.
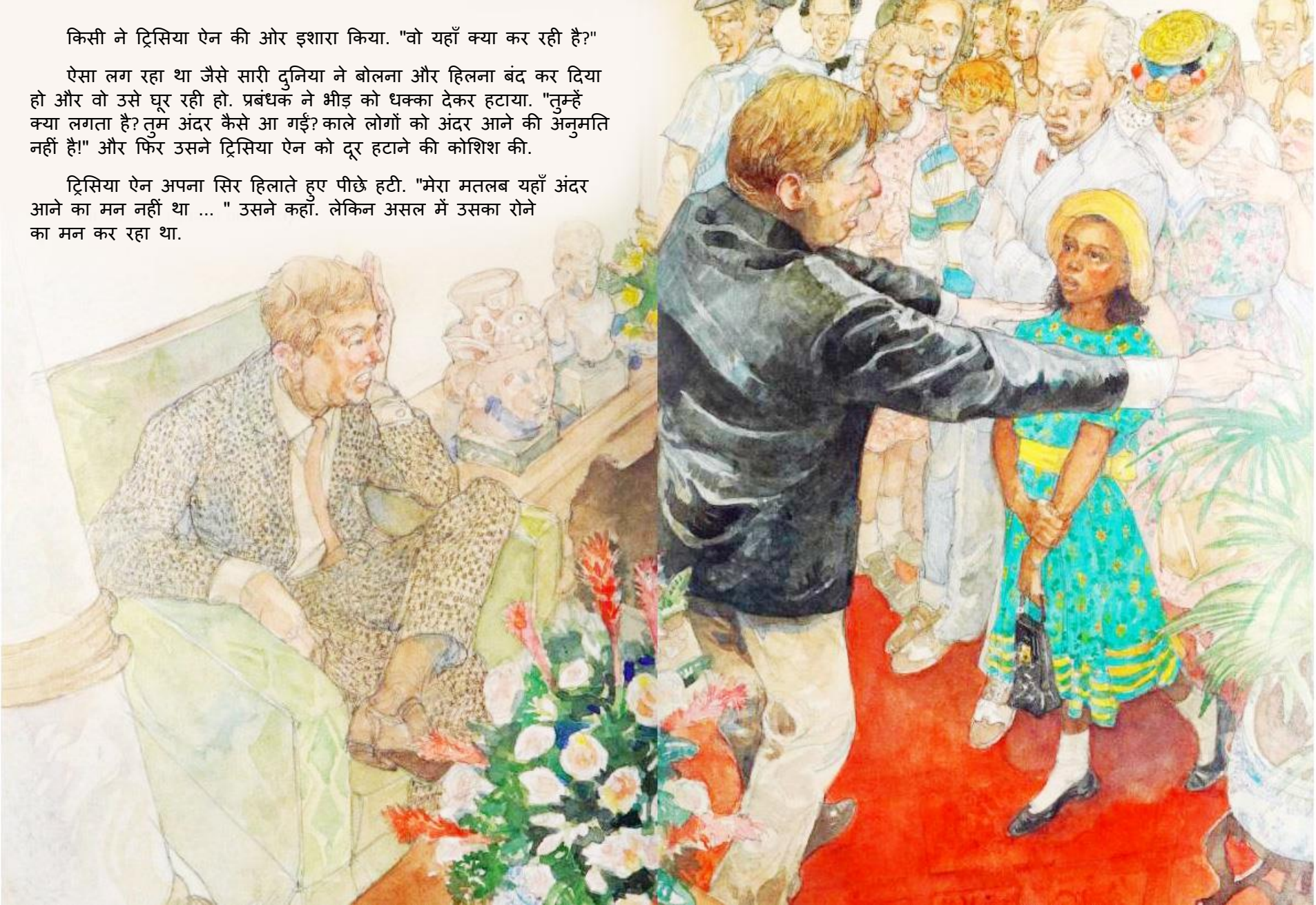
मिस्टर जॉन विलिस के पास से निकलकर, ट्रिसिया ऐन सीधे मिशन चर्च के खंडहर में भाग गई, जहां मामा फ्रांसिस अक्सर आराम करने के लिए रुकती थीं. वहाँ चारदीवारी की सुरक्षा में, बेचारी लड़की फूट-फूट कर रोने लगी. "किसी विशेष स्थान पर जाना इतनी ज़हमत झेलने लायक नहीं है," उसने कहा. मैं अब घर जा रही हूँ."

"मेरे फूलों को पहले ही सींचा जा चुका है," ऊपर से एक आवाज आई. वो ब्लूमिंग मैरी नाम की एक बुज़ुर्ग महिला थीं, जो बिना किसी की अनुमति और बिना किसी वेतन के बगीचे की देखभाल करती थी. सभी ने कहा कि वह नशे में रहती थीं, लेकिन मामा फ्रांसिस वो नहीं मानती थीं. "ब्लूमिंग मैरी एक दयालु और कोमल आत्मा हैं," उन्होंने ट्रिसिया ऐन को बताया था.

"तुम हार गयीं, बेटी?" महिला ने पूछा.

अपनी आवाज को स्थिर करने की कोशिश करते हुए, ट्रिसिया ऐन ने उत्तर दिया. "नहीं, मैडम. काश मेरी दादी यहाँ होतीं जो उस विशेष स्थान तक पहुँचने में मेरी मदद करतीं."

"तुम वहां खुद क्यों नहीं पहुंच सकतीं?"

"वो बहुत कठिन काम है. उसके लिए मुझे अपनी दादी की जरूरत होगी."

ब्लूमिंग मैरी ने सिर हिलाया और इस मामले पर सोचा.

फिर उन्होंने कहा, "मुझे विश्वास है कि तुम्हारी नानी यहाँ है, जैसे इस समय बोलते समय मेरी नानी भी यहाँ मेरे साथ हैं. करीबी से सुनो, और जो तुम्हें सुनाई दे वो मुझे बताना."

ट्रिसिया ऐन को शुरू में जो कुछ सुनाई दिया वो एक भौंरे की भिनभिनाहट थी. ब्लूमिंग मैरी किस बारे में बात कर रही थी?

लेकिन जैसे-जैसे उसने करीबी से सुना, उसे अपनी दादी की स्थिर आवाज सुनाई देने लगी. "तुम एक इंसान हो – तुम दुनिया में किसी और से बेहतर नहीं, तो किसी से बदतर भी नहीं हो. किसी विशेष स्थान पर पहुंचना आसान नहीं है. लेकिन इरादा छोड़ने की बजाए तुम लगातार अपनी मंज़िल की ओर बढ़ती रहो - और फिर एक दिन तुम ज़रूर अपने मुकाम पर पहुँचोगी."

ट्रिसिया ऐन ने इन शब्दों को इस शांत जगह कई बार याद किया. वे बहुत सुकून देने वाले शब्द थे. वो अब अकेला महसूस नहीं कर रही थी. उसने अपनी आँखें पोंछीं और अपनी टोपी सीधी की. "आपने सही कहा था मैडम," लड़की ने ब्लूमिंग मैरी से कहा. "मामा फ्रांसिस यहाँ है. और वो नहीं चाहेंगी कि मैं अब पीछे मुड़कर जाऊँ."

"चलो, तुम खोई नहीं हो," ब्लूमिंग मैरी ने ट्रिसिया ऐन को एक चमकीला नारंगी झिननिया का फूल देते हुए कहा.

"नहीं, मैडम मैं खोई नहीं हूँ." और फिर अलविदा कहकर वो आगे बढ़ी, एक दृढ़ निश्चय के साथ.

दो ब्लॉक के बाद में ट्रिसिया ऐन, ग्रैंड म्यूजिक पैलेस तक पहुंची, जहां कुछ लोग मैटिनी शो के लिए एकत्र हुए थे. ट्रिसिया ऐन के पास आते ही एक छोटे लड़के ने उससे कहा, "आप कैसी हैं, मैं हिक्की हूं और मैं आज छह साल का हुआ हूं. क्या आप अंदर शो देखने आ रही हैं?"

इससे पहले कि ट्रिसिया ऐन जवाब दे पाती, एक बड़ी लड़की ने उस लड़के का हाथ पकड़ लिया. "चुप रहो," उसने अपने दांत भींचते हुए कहा. "काले लोग सामने के दरवाजे में से अंदर नहीं घुस सकते. उन्हें पीछे वाले दरवाज़े से जाकर पिछली सीटों पर ही बैठना होगा. क्या तुम इतना भी नहीं जानते?" उसकी बहन ने जोर से कहा.

हिक्की ने ट्रिसिया ऐन को विस्मयकारी निगाहों से देखा. "क्या तुम वहाँ बैठने वाले हो?"

"बालकनी की आखिरी तीन पंक्तियों में? क्यों, मैं वहाँ बिल्कुल नहीं बैठूंगी, भले ही वहां जनवरी में तरबूज खिल रहे हों. इसके अलावा, मैं एक विशेष जगह पर जा रही हूँ - एक बहुत ही खास जगह पर," ट्रिसिया ऐन ने जवाब दिया. और फिर वो वहाँ से चली गई.

"मैं भी वहाँ जाना चाहता हूँ जहाँ वो जा रही है," उसने हिक्की को यह कहते हुए सुना. पर उसकी बहन ने उसे दरवाजे से अंदर खींच लिया.

कोने में ट्रिसिया ऐन ने एक बहुत ऊंची इमारत को देखा, जो गर्मियों की धूप में चमक रही थी. वो इमारत ईंटों और पत्थरों से कहीं अधिक थी. वो एक इमारत नहीं पर विचार था. मामा फ्रांसिस उसे स्वतंत्रता का द्वार बुलाती थीं. जब ट्रिसिया ऐन ने उसे देखा, तो उसे गुस्सा और शर्मिंदगी महसूस नहीं हुई. "आखिरकार," वो फुसफुसाई, "मैं अब उस विशेष स्थान पर पहुँच गई हूँ."
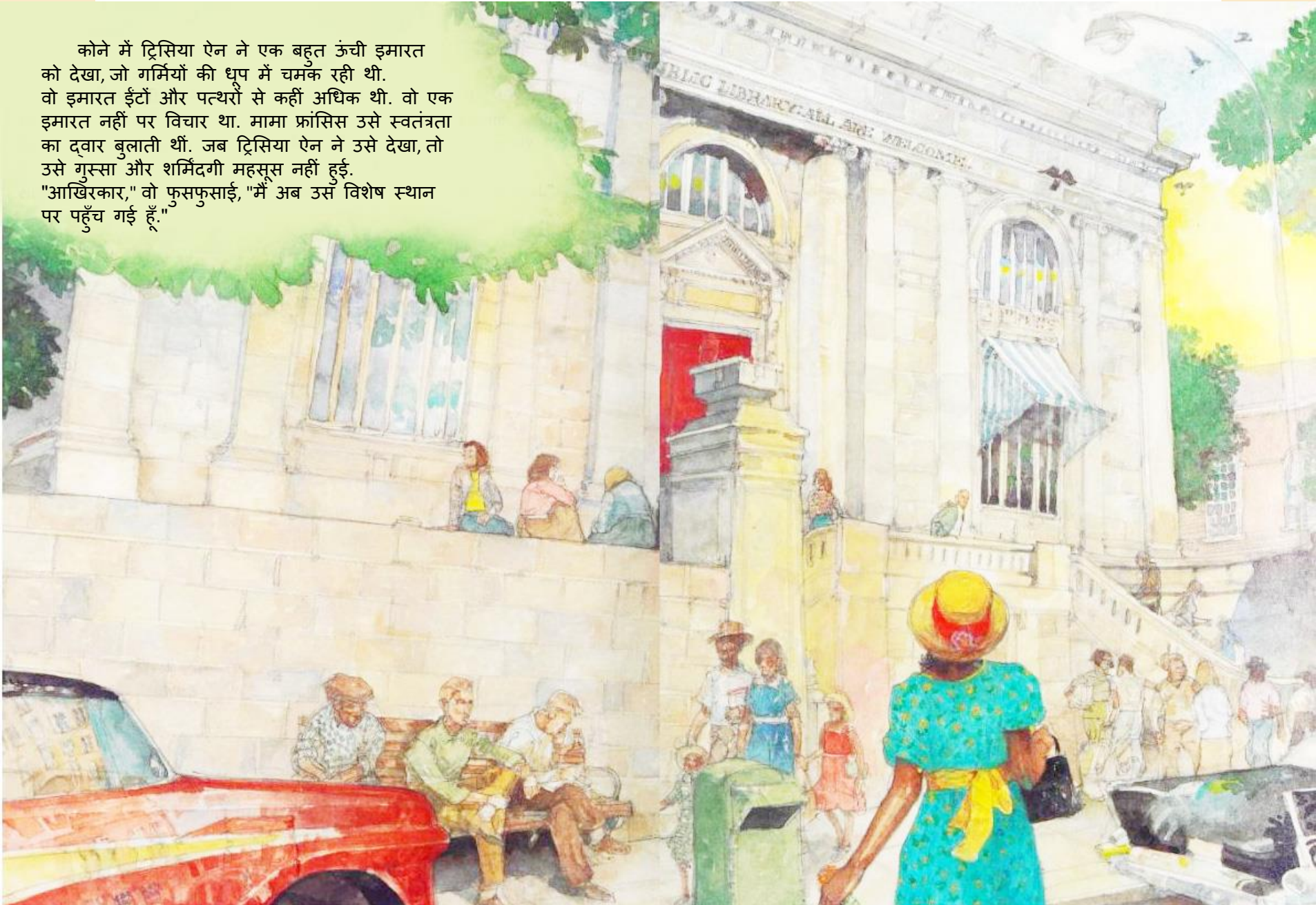
सीढ़ियों पर चढ़ने से पहले और सामने के दरवाजे में घुसने से पहले ट्रिसिया ऐन अपने सामने, पत्थर में छेनी से खुदे इस संदेश को देखने के लिए रुकी:

सार्वजनिक पुस्तकालय: यहाँ सभी का स्वागत है.

लेखक का नोट

यह मेरी अपनी कहानी है. हालाँकि सेटिंग काल्पनिक है, लेकिन घटनाएँ मेरे खुद के बचपन से ली गई हैं जब मैं नैशविले, टेनेसी में पल-बढ़ रही थी.

1950 के दशक में अधिकांश दक्षिणी शहरों की तरह नैशविले में भी, नस्लीय रंगभेद का बोलबाला था. होटल, रेस्तरां, चर्च और मनोरंजन पार्क के दरवाजे "जिम क्रो" अलगाव के संकेतों से भरे थे, जो काले लोगों को रोकते थे. उन्हें बसों में पीछे सवारी करने, अलग स्कूलों में पढ़ने, बस की अंतिम पंक्तियों में बैठने के लिए, और अलग पानी के फव्वारे से पानी पीने को मज़बूर होना पढता था. लेकिन, 1950 के दशक के उत्तरार्ध में नैशविले के सार्वजनिक पुस्तकालय निदेशक मंडल ने चुपचाप उनकी सभी सुविधाओं को सभी रंगों के लोगों के लिए खोलने की ठानी. हाई डाउनटाउन शाखा उन कुछ स्थानों में से एक थी जहां "जिम-क्रो" के संकेत नहीं थे और अश्वेतों के साथ कुछ सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता था.

अधिकांश अफ्रीकी-अमेरिकी माता-पिता तब तक इंतजार करते थे जब तक कि उनके बच्चे रंगभेद के अलगाव से निपटने के लिए परिपक्व नहीं हो जाते थे. उसके बाद ही वो बच्चों को अपने समुदाय से बाहर निकलने की इज़ाज़त देते थे. मैं लगभग बारह साल का थी जब मेरे माता-पिता ने मुझ पर भरोसा किया और मुझे अकेले पुस्तकालय में जाने की अनुमति दी. लेकिन ट्रिसिया ऐन की तरह, मुझे भी किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए पर्याप्त प्यार, सम्मान और गर्व के साथ पाला-पोसा गया था. रास्ते में मुझे हर तरह की नस्लीय कट्टरता और भेदभाव का सामना करना पड़ा. लेकिन, मेरे लिए, पुस्तकालय हमेशा एक विशेषता से भरा था जिसने बाद में मेरे प्रयासों को सार्थक बनाया. चूँकि वहाँ मेरा स्वागत हुआ, इसलिए मैंने वहां पुस्तकों को ज़्यादा उल्टा-पुल्टा और अधिक किताबें पढ़ीं. तब मुझे अपनी दादी की बात समझ में आई कि आखिर क्यों पुस्तकालय, होटल, फिल्म थिएटर, रेस्तरां और मनोरंजन पार्कों की तुलना में, कहीं अधिक रोमांचक और रोचक होते थे. एंड्रयू कार्नेगी जिन्होंने सैकड़ों महान पुस्तकालयों के निर्माण में मदद की थी, की तरह मेरी दादी भी यह मानती थीं कि "पढ़ना, स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक द्वार होता है."